Subject:- Sociology
Deptt. of Sociology

By:-Dr. Rajesh Kr.
Sociology

Sub: संस्था, एवं इसकी विशेषताएँ, प्रकार्य, प्रकार

संस्था शब्द का प्रयोग कई रूपों में किया जाता है, यथा संगठन के रूप में, व्यवहार प्रतिमानों के रूप में तथा कार्य विधि एवं नियमाचारों की एक व्यवस्था के रूप में। अति सामान्य अर्थ में, संस्था शब्द का प्रयोग सार्वजनिक अथवा अर्द्ध सार्वजनिक प्रकृति के रूप में किसी संगठन के लिए किया जाता है। जिसका एक स्थानीय मंडल, भवन, अथवा किसी प्रकार की एक भौतिक व्यवस्था होती है। जिसकी स्थापना किन्हीं समाजोपयोगी तथा प्रशिक्षण लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु की जाती है। जैसे:- कॉलेज, विश्वविद्यालय, अस्पताल, चिकित्सालय, अनाथालय इत्यादि।

कुछ समाजवैज्ञानिकों के मतानुसार संस्थाएँ व्यक्तियों एवं समूहों के बीच सम्बन्धों को नियंत्रित करने वाले नियमाचारों एवं कार्यविधियों का एक स्थायी एवं स्वीकृत प्रतिमान होती है।

संस्था की विशेषताएँ:

- आवश्यक आवश्यकताओं की संतुष्टि करती है।
- संस्था की प्रकृति अमूर्त होता है।
- सामाजिक संस्थाएँ सार्वभौमिक होती हैं।
- संस्थाएं व्यक्ति पर नियम-कानून, धर्म, नैतिकता, राज्य के नियम कानून व्यवस्था लागू करती है एवं व्यक्ति के व्यवहार को नियंत्रित करती है।

संस्था के प्रकार्य:

- व्यक्ति के कार्य एवं उसकी क्रियाओं को दैनिक जीवन में आसान बनाती है।
- यह समाज के व्यक्ति को नियंत्रित करने एवं उसे बनाकर रखने का प्रयास करती है।
- संस्थाएँ प्रत्येक व्यक्ति के लिए उसकी भूमिका को निर्धारित करती है जिसे वह संस्था के द्वारा प्राप्त करता है और उसी के अनुसार अपनी प्रस्थिति को कायम रखता है।
- समाज के नियम-कानून, रीति-रिवाज, परंपरा एवं संस्कृति को बनाकर रखने में सहायता करती है।
- यह अपने सदस्यों के बीच सहृदयता एवं एकता को बनाए रखने में अपनी अहम भूमिका प्रदान करती है।

संस्था के प्रकार:

- कानूनी संस्था - जो कानून बनाने का कार्य करती है।
- मूल आधारिक संस्था: जो समाज को बनाए रखने में मदद करती है; जैसे: परिवार, विवाह, नातेदारी, धर्म इत्यादि
- सहायक संस्थाएं: जो आवश्यक तो नहीं होती हैं लेकिन समाज को बनाए रखने में इनका योगदान होता है, जैसे: सिनेमाघर, क्लब, स्टेडियम, पार्क,
- औद्योगिक संस्थाएं (व्यावसायिक संस्थाएं) - जैसे: उद्योग, कल-कारखाने, प्रौद्योगिकी, कृषि, जो व्यक्ति के जीवनयापन के लिए सुविधा प्रदान करती है।